नारी शक्ति की साक्षात् मिसाल थी जगदम्बा सरस्वती

नारी शक्ति का रूप है बशर्ते वो अपनी आन्तरिक शक्ति को पहचान ले। कई बार उसे हनुमान की मुवाफिक याद दिलाना पड़ता है तो कई बार अपनी शक्तियों को जगाना पड़ता है। यही कारण है कि भारत देश में नारी शक्ति को देवी के रूप में अनेक अवतार सामने आये है। दुर्गा, सरस्वती, काली और लक्ष्मी नारी के ही शक्ति स्वरूप को प्रदर्शित किया है। इसी तरह के सच्चे और विश्वकल्याणकारी वृतान्त से अवगत कराते है जिन्होंने भौतिक युग में भी अपने दिव्य कर्मों से सिद्ध कर दिया कि नारी शक्ति का अवतार बन सकती है। जगदम्बा सरस्वती नाम से प्रसिद्ध ओम राधे ने अपने अन्दर उन सारे गुणों को अपने आत्मसात किया जिसके कारण नर अथवा नारी को देवी-देवता की उपाधि से नवाजा जाता रहा है।

श्रीमदभागवद गीात में कहा गया है कि परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से यज्ञ द्वारा सृष्टि रची। अनेक प्रकार के यज्ञों का उल्लेख करते हुए ये कहा गया है कि सब प्रकार के यज्ञों में से ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ है। परमात्मा ने ईश्वरीय विश्व विद्यालय के स्थापन की परन्तु ज्ञान शब्द को इसलिए जोड़ा गया क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान सुनने वाले लोग काम क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की तथा तन-मन-धन आदि की ज्ञान-यज्ञा में आहुतियां देते हैं। यदि आहुतियां न दी जाएं तो ज्ञान को यज्ञ की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। यज्ञ वो है जिसमें कुछ न कुछ दिया जाता है।

विद्या की देवी सरस्वती का जन्म भी यज्ञ से हुआ था इसिलए द्रोपदी को यज्ञसैनी भी कहा जाता है। इस प्रकार विद्या की देवी सरस्वती का जन्म भी यज्ञ से हुआ माना जाता है। सोचने की बात है कि अगिनकुंड वाले यज्ञ से तो किसी मानवीय देहधारी का जन्म हो ही नहीं सकता क्योंकि अगिन तो शरीर को जला देती है। जब परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ज्ञान यज्ञ की स्थापना की तो उस यज्ञ से ही इस महान विभूति का अलौकिक जन्म हुआ। मात्र 14 साल की तरूण आयु में ही संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्पर्क में आयी और उन्हें परमात्मा ने उनके भविष्य और भूतकाल के दैवी जीवन का साक्षात्कार कराया तथा उन्हें अपने कर्मों के प्रति जागृत किया। यहीं से प्रारम्भ हुई नारी से शक्ति स्वरूपा देवी बनने की महान कहानी का श्रीगणेश। यह ज्ञान अविनाशी रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ की पहली नारी थी जिनका इस संस्था के प्रारम्भ में पदार्पण हुआ। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने ओम राधे के भविष्य के रूप को अच्छी तरह जान गये थे कि यह तो पूर्व की देवी और सरस्वती तथा काली बन लाखों करोड़ों आत्माओं के जीवन का उद्धार करने वाली जगत अम्बा है। जैसे ही परमात्मा द्वारा विश्व परिवर्तन की महान प्रक्रिया का संज्ञान हुआ तुरन्त ही उन्होंने अपना सब कुछ परमात्मा को अर्पण करते हुए विश्व बेहतरी की प्रक्रिया में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

ओम राधे का नाम पड़ने के पीछे भी आध्यात्मिक रोचक पहलू है। सरस्वती नाम पड़ने से पहले उनका नाम राधा था। जब ओम मण्डली नाम से ज्ञान यज्ञ का प्रारम्भ हुआ और वहाँ वे ओम की ध्वनि किया करती। देह से न्यारा होकर वे ईश्वरीय स्मृति में ऐसे मगन हो जाती जो उनकी रूहानियत और शक्ति स्वरूप को देखकर देखने व सुनने वालों को भी देह से न्यारा होने का आभास होने लगता। तब उनमें से कुछ लोगों को दिव्य दृष्टि प्राप्त होने लगी और उन्हें श्रीकृष्ण तथा श्री राधे का साक्षात्कार होने लगता। तब लोगों ने उन्हें राधा के बजाए ओम राधे के नाम से पुकारना प्रारम्भ कर दिया। ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान की इतनी सरल और सहज ढंग से व्याख्या करती कि लोग सहज ही उन्हें ज्ञान की देवी सरस्वती का रूप दिखायी देने लगा। मातेश्वरी सरस्वती ने संस्था में आने वाले लोगों को ऐसा अनुशासित किया था कि विरोध करने वाले लोग भी प्रभावित होकर अपना विरोध वापस ले लेते थे। कुछ विरोधी तत्वों ने न्यायालय में भी अभियोग चला दिया परन्तु वहाँ भी मातेश्वरी जी ने निर्भय, निश्चित, नि:स्वार्थ और निर्मल स्थिति के द्वारा सबका सामना किया। उस दौर में विश्व के इतिहास में उनके जैसी आयु वाली कोई और कन्या नहीं होगी, जिसने इस प्रकार की विषम परिस्थिति का सामना किया होगा। परमपिता परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान में अनेकानेक नवीनताएं होने के कारण जगह-जगह स्वार्थी तत्वों ने उनका घोर विरोध किया और हल्ला-गुल्ला भी किया। परन्तु मातेश्वरी निश्चित, निर्भय और नम्रचित्त बनी रहीं। जिस किसी विरोधी ने उन्हें देखा वे उनके मुरीद होकर रह गये। इस प्रकार मातेश्वरी जी की स्थिति संसार के आकर्षणों से उंचा उठाकर शिवबाबा के आकर्षण क्षेत्र में रहती थी। इसलिए उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली और रूहानी आकर्षण से भरा था। उनकी वाणी में मधुरता थी और उनके बोल मन को शांत करने

वाले तथा शक्ति संचारित करने वाले होते थे।

मातेश्वरी सरस्वती ने धीरे–धीरे अपने तपोबल को उच्च पराकाष्ठा पर पहुंचाने तथा पूरे विश्व में महिलाओं को देवी का रूप एहसास कराने के लिए अपने मिशन को आगे बढ़ाती रही। संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के निर्देशन में वे लगातार लोगों का मार्गदर्शन करते हुए नवीन यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवता के सम्राज्य की स्थापना में लगी रही। उनके शक्ति स्वरूप को देखकर लोगों को सहज ही दुर्गा और काली तथा सरस्वती के साक्षात मूर्ति का एहसास होने लगता। पवित्रता और दिव्यता की दिव्य मूर्ति बन कर उन्होंने इस मायावी दुनियां में सर्व आत्माओं को शक्तिशाली बनाने तथा उसे अपने उच्च शक्ति का एहसास कराने का लगातार प्रयास करती रही। उनके जीवन में अनेक घटनाएं हुई जो भयावह एवं विकराल रूप धारण किये हुए होती थी। परन्तु वे इस विविधता पूर्ण विश्व नाटक में अटल निश्चय होने के कारण सदा निश्चिंत रहती थी। उनके अंदर दुरागामी स्थिति इतनी प्रबल थी कि कठिन से कठिन कार्य को भी सहजता से करते हुए एक नया आयाम देती थी।

धीरे–धीरे विश्व नवनिर्माण की यह प्रक्रिया लगातार बढ़ती रही। परमात्मा का गुप्त कार्य लगातार चलता रहा। परन्तु उन्हें भौतिक शरीर से भी उन्हें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा परन्तु उसे बड़ी सहजता से पार करते हुए आत्मबल से उसे पार किया। एक बार उन्हें एक गम्भीर बीमारी ने घेर लिया और वे अपने तपोबल से यह जान लिया कि उनका शरीर अब ज्यादा साथ नहीं देने वाला है तब उन्होंने अपने पुरूषार्थ को और तेज कर दिया। उनके साथ में आयी माताओं बहनों को उन्हें शक्ति स्वरूपा बन कर पूरे विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया में सहभागी बनने की गहन शिक्षा देती रही।

उनके भौतिक शरीर का अब छूटना तय हो गया। उस दिन वे प्रजापिता ब्रह्मा बाबा तथा संस्था के सभी ब्रह्मा वत्सों से मिली तथा उन्होंने मातृवत हरेक वत्स को स्नेह और मुस्कान से मौन भाषा में सम्बोधित किया और उनसे नेत्र मिलन किया तथा अपने हाथों से हरेक को स्नेह का सूचक सेब प्रसाद अथवा सौगात के रूप में दिया। ये मालूम होते हुए भी कि वे थोड़े समय की मेहमान है या इसके बाद वे प्रस्थान करने वाली हैं, उनमें कोई व्याकुलता नहीं हुई। अंतिम क्षणों में उन्होंने अपना हाथ बाबा के हाथ में दिया तथा सम्पूर्णत की स्थिति प्राप्त करते हुए तथा संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा से नैन मुलाकात करते हुए 24 जून 1965 को अपने नश्वर का त्याग किया। आज जगदम्बा सरस्वती हमारे बीच में नहीं है परन्तु उनकी प्रेरणा और उनके शक्ति स्वरूप व्यक्तित्व ने पूरे विश्व के 135 देशों में लाखों महिलाओं को शक्ति स्वरूप धारण करने का जो मार्ग प्रशस्त किया काबिले तारीफ है। करीब चालीस हजार शक्ति स्वरूपा बहनों का विशाल समूह ने चारदिवारी तथा नारीत्व के दब्बू स्वभाव को तोड़ते हुए शक्ति स्वरूप धारण कर पूरे विश्व को पावन बनाने हेतु अपने जीवन को ईश्वरीय विश्व विद्यालय में समर्पित कर दिया है। आज के दौर में किसी भी परिवार के एक या दो बच्चों को सदमार्ग पर ले चलना कठिन है परन्तु श्वेत वस्त्रधारीणी बहने लाखों लोगों के जिन्दगी में ज्ञान का प्रकाश बनकर संस्था की प्रारम्भ के प्रशासिका जगदम्बा सरस्वती के सपनों को साकार करते हुए नर से नारायण तथा नारी से लक्ष्मी बनाने के महान कार्य को बड़ी निर्भीकता और निडरता के साथ आगे बढ़ रही है। उनका पूर्ण विश्वास है कि एक दिन अवश्य ही पूरे विश्व को बदल कर एक बेहतर दुनियां का निर्माण करेंगे। जहाँ पर सुख और शांति के सम्राज्य के अलावा कुछ भी नहीं होगा।

आज जगदम्बा सरस्वती हमारे बीच में नहीं है परन्तु उनकी मार्गदर्शना और उनकी प्रेरणायें महान बनने की राह दिखाती है। सम्भवत यह विश्व की पहली ऐसी संस्था है जिसका संचालन बहनों के हाथ में है। ये ऐसे मान्यताओं को साथ लेकर आगे बढ़ रही है। जिनके बारे में आज कल्पना भी कठिन सी लगती है। परन्तु देवी की साक्षात मिसाल जगदम्बा सरस्वती ने दैवी गुणों को ऐसा बीजारोपण किया कि पूरे विश्व में वन्दे मातरम का ध्वज लहरा रहा है। ऐसे श्रेष्ठ मार्ग की राही बनाने वाली शक्ति स्वरूपा महान विभूति को उनके पुण्य तिथि पर शत शत नमन ।